कार्यक्रम

(मसविदा)

प्रस्तावना

भारत की सर्वहारा क्रांति के सम्मुख केन्द्रीय व सर्वप्रथम कार्यभार एक अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का गठन व निर्माण है। अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के गठन व निर्माण के दौरान ही भारतीय क्रांति का सटीक व वैज्ञानिक कार्यक्रम सामने आ सकता है।

प्रस्तुत कार्यक्रम पुनर्गठन कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) द्वारा भारत के कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के सामने प्रस्तुत एक मसविदा कार्यक्रम है। यह एक पार्टी का कार्यक्रम न होकर एक ऐसे पूर्व पार्टी संगठन की ओर से जारी मसविदा कार्यक्रम है जो कि मानता है कि आज देश में मौजूद कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन पूर्व पार्टी संगठन हैं। और उनके द्वारा जारी कार्यक्रम अपूर्णता लिये रहेंगे। इनमें ठोस विश्लेषण व सटीक नीति का किंचित अभाव बना रहेगा। इसके कारणों में भारतीय क्रांति की जटिलतायें भी हैं।

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1.1 भारतीय समाज में यूरोपीय उपनिवेशवादियों के आने से पूर्व एक विकसित सामंती व्यवस्था थी। यह सामंती व्यवस्था अपने गर्भ में एक पूंजीवादी व्यवस्था के जन्म की सम्भावना लिये हुए थी। भारतीय समाज में प्रभुत्व व कब्जे को लेकर यूरोपीय उपनिवेशवादियों के बीच चले संघर्ष में ब्रिटिश उपनिवेशवादी मुख्यतः यूरोप में मिली सफलता व श्रेष्ठता के दम पर भारतीय समाज में भी निर्णायक शक्ति के रूप में उभरे। भारतीय समाज में स्वतंत्र व स्वाभाविक ढंग से पूंजीवाद के जन्म की सम्भावना को ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के हस्तक्षेप और उनकी उत्तरोत्तर विजय ने समाप्त कर दिया। भारत की औपनिवेशिक लूट ने ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया।

1.2 ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने अपने शासन को स्थापित करने तथा अधिशेष को हासिल करने के लिए पुराने सामन्ती सम्बंधों को अपना आधार बनाया तथा अपनी जरूरतों के अनुरूप ढ़ाला। अपनी औपनिवेशिक जरूरतों की पूर्ति के लिए प्रशासनिक व शिक्षातंत्र का क्रमशः विकास किया तथा उन्नीसवीं सदी के मध्य से रेल, उद्योग, खान-बागान, संचार साधनों इत्यादि का विकास किया। इन प्रक्रियाओं से भारतीय समाज एक सामंती समाज से अर्ध सामंती-औपनिवेशिक समाज में तब्दील हो गया। यह सत्ता हस्तांतरण संघर्षरत भारतीय जनता की पीठ-पीछे किये गये एक सौदे (deal) का प्रतिफलन था। इस सौदे का उद्देश्य भारत की जनवादी क्रांति को रोकना था।

1.3 ब्रिटिश उपनिवेशवादियों द्वारा अध्यारोपित व्यवस्था के जरिये भारतीय समाज में नये वर्गों का उदय हुआ। इन नये उदीयमान वर्गों में पूंजीपति वर्ग, निम्न पूंजीपति वर्ग के साथ-साथ इतिहास का सबसे क्रांतिकारी वर्ग सर्वहारा वर्ग भी था। ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के दलाल व सहयोगी के रूप में जन्म लेने वाला भारतीय पूंजीपति वर्ग कालान्तर में विशेषकर प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध में विकसित होकर सुधारवादी पूंजीपति वर्ग में तब्दील हो गया। इसके साथ-साथ वह भारत की राजनैतिक सत्ता को हासिल करने के लिए प्रयत्नशील हो उठा। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ इसने संघर्ष-समझौते की नीति अख्तियार की। जनता के क्रांतिकारी संघर्षों का इस्तेमाल कर वह ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को समझौते करने के लिए बाध्य करता रहा। दुनिया में मौजूद वर्गीय संतुलन भी इसमें इसकी मदद करता था। कांग्रेस पार्टी के जरिये इस वर्ग ने आजादी की लड़ाई का नेतृत्व किया। भारतीय मजदूर वर्ग और उसकी पार्टी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी यद्यपि आजादी की लड़ाई में प्रमुख शक्ति रहे थे परन्तु उनका नेतृत्व आजादी की लड़ाई में कायम नहीं हो सका। फलतः ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के हाथ से सत्ता भारतीय पूंजीपति व भूस्वामी वर्ग के हाथों में आयी।

1.4 भारत की कम्युनिस्ट पार्टी का जन्म बीस के दशक में हुआ। एक केन्द्रीय कमेटी के तहत सुव्यवस्थित पार्टी के रूप में इसका विकास तीस के दशक में हुआ। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ने वाम व दक्षिणपंथी भटकावों के बावजूद देश के सर्वहारा तथा अन्य मेहनतकश वर्गों को साम्राज्यवाद व सामंतवाद विरोधी संघर्षों के दौरान संगठित किया। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ने मजदूरों, किसानों, विद्यार्थियों, युवाओं, लेखकों, संस्कृति-कर्मियों के जुझारू व व्यापक जन भागीदारी वाले जनसंगठनों का निर्माण किया। अनेकों-अनेक कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों ने इन संघर्षों में अपनी शहादत दी। आजादी के बाद एक दशक बीतते-बीतते यह पार्टी एक संशोधनवादी पार्टी में तब्दील हो गयी।

1.5 ब्रिटिश साम्राज्यवाद तथा सामन्तवाद के खिलाफ जुझारू व शौर्यपूर्ण संघर्षों में भारत के मेहनतकश वर्गों की अग्रणी भूमिका रही। मजदूरों, किसानों, सैनिकों, महिलाओं, कर्मचारियों, बुद्धिजीवियों तथा आदिवासियों और विद्यार्थी-युवाओं के संघर्षों की बदौलत तथा समाजवाद व राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों व द्वितीय विश्व युद्ध के कारण उपजी विशिष्ट अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति में ही भारत में सत्ता का हस्तांतरण ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के हाथों से भारतीय पूंजीपति व भूस्वामी वर्ग को हुआ था। एक बहुराष्ट्रीय देश में भारत नाम के विशिष्ट किस्म के राज्य का जन्म व निर्माण ब्रिटिश उपनिवेशवाद की अपनी शोषण-उत्पीड़नकारी जरूरतों व उसके खिलाफ भारतीय जनता के जुझारू संघर्षों के दौरान तथा अन्ततः ब्रिटिश उपनिवेशवाद की समाप्ति की प्रक्रिया में हुआ। 1947 में यह आजादी अत्यंत कमजोर थी। लेकिन एक दशक बीतते-बीतते विऔपनिवेशीकरण की प्रक्रिया के तहत यह वास्तविक हो गयी। भारत को खण्डित व रक्तरंजित आजादी मिली थी। ब्रिटिश साम्राज्यवादी देश को दो हिस्सों भारत व पाकिस्तान में बांट गये।

1.6 सत्ता हस्तांतरण के पश्चात भारतीय पूंजीपति वर्ग ने भू-स्वामी वर्ग से मिलकर पूंजीवादी राजसत्ता का निर्माण किया। भारत के पूंजीपति वर्ग ने साम्राज्यवाद और सामन्तवाद से निर्णायक विच्छेद के स्थान पर समझौते का रुख अपनाया।

1.7 साम्राज्यवादी चौखटे की सीमाओं के भीतर भारतीय पूंजीपति वर्ग की राजनैतिक स्वतंत्रता को मजबूती समाजवादी खेमे के अस्तित्व में आने, द्वितीय विश्वयुद्ध में यूरोपीय साम्राज्यवादियों की क्षति, एशिया-अफ्रीका महाद्वीपों में राष्ट्रीय मुक्ति की लहर तथा स्वयं भारत में जनता में साम्राज्यवाद विरोधी चेतना के कारण मिली।

1.8 भारतीय पूंजीपति वर्ग ने सामंतवाद के साथ भारतीय जनता के अंतर्विरोध को अपने पक्ष में इस्तेमाल करके अपनी स्थिति सुदृढ़ की और अपने आधार का जनता में विस्तार किया। सामंतों-जमींदारों के प्रति नरमी का रुख अपनाते हुए तथा उनके प्रतिरोध और दबाव के बावजूद भारतीय कृषि को पूंजीवादी रूपान्तरण की ओर बढ़ाया। सामंती भूस्वामियों को पूंजीवादी भूस्वामी बनने को अवसर देते हुए भूमि सुधार किये। लम्बे समय तक चली इस प्रक्रिया में पूंजीपति वर्ग ने अंततः सामंतवाद की भौतिक जमीन को खिसका दिया।

2. वर्तमान भारतीय समाज

2.1 गैर क्रांतिकारी मार्ग से सुधारों के जरिये तथा पूंजी के भारतीय समाज के रंध्र-रंध्र में प्रवेश करने से आजादी पूर्व का अर्ध सामंती-औपनिवेशिक समाज आज साम्राज्यवाद के साथ आर्थिक नव-औपनिवेशिक सम्बंधों में बंधे मूलतः पूंजीवादी समाज में तब्दील हो गया है।

2.2 भारतीय समाज में पूंजीवादी उत्पादन सम्बंध कायम हो गये हैं। सामंती व प्राक् पूंजीवादी उत्पादन सम्बंध अवशेष के रूप में देश में बचे हैं। वर्गीय संरचना में निर्णायक परिवर्तन आ गये हैं। भू-सामंत, जमींदारों जैसे वर्गों का स्थान देहातों में पूंजीवादी भू-स्वामियों धनी किसानों और फार्मरों ने ले लिया है। ग्रामीण भारत में भी पूंजी और श्रम का अन्तर्विरोध प्रधान बन गया है। पूंजीवादीकरण की विभिन्न प्रक्रियाओं के चलते किसान आबादी का आकार घटता जा रहा है। भारतीय समाज किसान प्रधान से सर्वहारा प्रधान समाज में तब्दील हो गया है।

2.3 साम्राज्यवाद से भारतीय शासक वर्ग ने कभी भी निर्णायक विच्छेद नहीं किया। भारत में साम्राज्यवाद की उपस्थिति हमेशा बनी रही। अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता बनाये रखते हुए इसने वैश्विक पैमाने पर सक्रिय अंतर्विरोधों का लाभ उठाकर, अपनी पूंजी व तकनीक की समस्या हल करते हुए भारतीय समाज का औद्योगीकरण किया और पूंजी की गिरफ्त में पूरे भारतीय समाज को ले आया। साम्राज्यवाद से सीमित अलगाव बनाते हुए पहले इसने नियंत्रणवादी संरक्षणवादी मॉडल के जरिये अपने गृह बाजार को संरक्षित किया फिर नब्बे के दशक से मूलतः संरक्षणवादी नीतियों को क्रमशः त्यागते हुए यह मुक्त पूंजीवादी व्यवस्था की ओर बढ़ा है। साम्राज्यवादी विश्व व्यवस्था से इसका एकीकरण बढ़ रहा है। अपने गृह बाजार में वरिष्ठ साझेदार की हैसियत होने के बावजूद विश्व साम्राज्यवादी व्यवस्था में इसकी हैसियत कनिष्ठ साझेदार की है। साम्राज्यवाद के साथ आर्थिक नव-औपनिवेशिक सम्बंधों में बंधा भारतीय शासक वर्ग छोटे पड़ोसी देशों के साथ गैर-बराबरी के सम्बंध रखता है, विस्तारवादी रुख अपनाता है तथा भविष्य में साम्राज्यवादी शक्ति बनने के मंसूबे पालता है।

2.4 भारतीय पूंजीवादी राज्य भारत के पूंजीपति वर्ग की मजदूर तथा अन्य मेहनतकश वर्गों पर तानाशाही है। भारत के शासक वर्ग ने शासन के रूप में संसदीय रूप को चुना है। भारतीय राज्य के सभी अंग-उपांग पूंजी के शोषण व शासन के साधन हैं। केन्द्र सरकार, राज्य सरकारें, पूरे देश का नौकरशाही तंत्र शासक वर्ग के तात्कालिक व दूरगामी

हितों को साधते हैं तथा तदनुरूप नीतियों को निर्मित व लागू करते हैं। भारतीय संविधान की आत्मा पूंजी से निर्मित है और न्यायपालिका उसके हितों की रक्षा अत्यंत सूक्ष्मता से करती है।

2.5 भारतीय समाज में जनवादी क्रांति न होने के चलते मूलाधार में परिवर्तन जहां शनैः-शनैः हुये वहां अधिरचना के राज्येतर क्षेत्रों में इन परिवर्तनों की गति और धीमी रही है। पूंजी के बढ़ते वर्चस्व ने सभी प्राक-पूंजीवादी संरचनाओं की नींव खोद डाली है। इस प्रक्रिया ने अधिरचना के बदलने में महत्वपूर्ण व निर्णायक भूमिका निभायी है। आज भारतीय समाज के मूलाधार और अधिरचना दोनों ही क्षेत्रों में पूंजी का वर्चस्व है। सामंती या अन्य प्राक्-पूंजीवादी संरचनायें पूंजी के मार्ग में अवरोध खड़े करने में सक्षम नहीं रह गयी हैं।

2.6 भारतीय पूंजीवाद का संकट 'विकासमान अर्थव्यवस्था' के वर्तमान चरण के बावजूद दीर्घकालिक है। बेरोजगारी की उच्चदर, व्यापक गरीबी-भुखमरी, मेहनतकश आबादी का निरंतर गिरता जीवन स्तर व क्रय शक्ति, असमान-असंतुलित विकास, कृषि का पिछड़ापन और उसकी ठहरी हुई विकास दर, कृषि संकट, कामगार आबादी के बड़े हिस्से का कृषि कार्यों में लगा होना, शहर और गांव के बीच बढ़ता विभाजन, तेज होता वर्गीय ध्रुवीकरण, मुद्रास्फीति, सेवा क्षेत्र का उद्योग व कृषि पर भारी पड़ना, जैसे कारक इस व्यवस्था की अस्थिरता व संकट को न केवल बनाये रखते हैं बल्कि उसे त्वरित भी करते हैं। साम्राज्यवादी व्यवस्था से भारतीय पूंजीवादी व्यवस्था का बढ़ता एकीकरण इस संकट को हल करने के बजाय और विकराल बनायेगा।

2.7 भारत राजनैतिक तौर पर आजाद है, हालांकि साम्राज्यवाद इसकी राजनैतिक आजादी पर लगातार दबाव बनाये रखता है। भारत पर प्रभाव व नियंत्रण बनाये रखने के लिए साम्राज्यवाद मूलतः आर्थिक तरीकों पर निर्भर करता है। पूंजी व तकनीक का निर्यात; ऋण-अनुदान; मुनाफे का स्थानान्तरण; विभिन्न साम्राज्यवादी संस्थाओं यथा-अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व बैंक, विश्व व्यापार संगठन आदि के जरिये लादी जाने वाली शर्तें व समझौते इत्यादि इस नियंत्रण व प्रभाव को बनाये रखने के कारगर हथियार हैं। भारत का पूंजीपति वर्ग भारत में साम्राज्यवाद का सामाजिक अवलम्ब है। भारत का पूंजीपति वर्ग अंतर्राष्ट्रीय मूल्य विनियोग में साम्राज्यवाद का कनिष्ठ साझेदार है। साम्राज्यवादी पूंजी भारत में लूट और प्रभुत्व की मंशा से आती है। गौण उत्पाद के तौर पर यह भारतीय समाज में विकृत व असंतुलित विकास में योगदान करती है।

2.8 भारत के पूंजीपति वर्ग में इजारेदार व गैर इजारेदार, निजी व सार्वजनिक क्षेत्र के नौकरशाह पूंजीपति, केन्द्रीय व क्षेत्रीय पूंजीपति, शहरी और ग्रामीण पूंजीपति आदि के रूप में बंटवारा व धड़ेबंदी मौजूद है। शासक वर्ग के आपसी अंतर्विरोध के रूप में यह बंटवारा व धड़ेबंदी प्रकट होती रहती है तथा भारतीय राज्य की नीतियों में तदनुरूप प्रभाव डालती रहती है।

2.9 सर्वहारा वर्ग भारत का सबसे बड़ा वर्ग है। यह वर्ग भारतीय समाज का सबसे क्रांतिकारी वर्ग है। भारत का सर्वहारा वर्ग भारतीय क्रांति की न केवल नेतृत्वकारी शक्ति है बल्कि मुख्य लड़ाकू शक्ति भी बन गया है। भारत का सर्वहारा वर्ग उद्योग, कृषि व सेवाक्षेत्र में काम करने वाले मजदूरों से मिलकर बना है। औद्योगिक मजदूर वर्ग के नेतृत्व में भारत का सर्वहारा वर्ग संगठित होगा। भारत के मजदूर वर्ग का एक छोटा हिस्सा अभिजात मजदूरों का है। अभिजात मजदूर तबका भारत में मजदूर वर्ग में सबसे सुविधापरस्त तबका है तथा यह अपने हितों को भारत के पूंजीपति वर्ग व भारतीय राज्य के साथ बांधता है। वर्तमान समय में पूंजीवादी राज्य की नीतियों के कारण अभिजात मजदूर तबके का आकार सापेक्षतः छोटा होता जा रहा है। अभिजात मजदूर का नेतृत्व मौजूदा मजदूर आंदोलन के पतन के कारणों में एक है। क्रांतिकारी आंदोलन के उभार के समय अभिजात मजदूरों का एक हिस्सा आम मजदूर वर्ग के साथ आ सकता है।

2.10 भारत की कुल आबादी का बहुलांश हिस्सा ग्रामीण इलाकों में रहता है। कृषि कार्यों में कुल कामगार आबादी का लगभग 3/5 हिस्सा लगा हुआ है। पूंजीवादीकरण की विभिन्न प्रक्रियायें भारतीय राज्य के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप में चली हैं। जमींदारी व मध्यस्थों का उन्मूलन, किरायेदारी सुधार के साथ कृषि के उत्पादन और वितरण का पूंजीवादीकरण और उसका विकास जैसी गतिविधियां शामिल हैं। अमेरिकी साम्राज्यवाद, संयुक्त राष्ट्र संघ की विभिन्न संस्थाओं, अन्य साम्राज्यवादी मुल्कों की मदद व हस्तक्षेप से भारतीय कृषि में पूंजी की गिरफ्त बढ़ी व पूंजीवादी सुधार हुए। आधुनिक बीज, कृषि उपकरण, रासायनिक खाद, बाजार व्यवस्था के साथ बैंकों के विशाल तंत्र ने कृषि के अर्ध सामंती स्वरूप को तोड़ कर पूंजीवादी स्वरूप प्रदान कर दिया। कृषि के दोहन में भारतीय पूंजी की बड़ी भूमिका के साथ साम्राज्यवादी पूंजी सक्रिय है। भारतीय कृषि के संकट का चरित्र अर्ध सामंती न होकर पूंजीवादी है। सामन्ती अवशेष मूलाधार व अधिरचना में मौजूद हैं और ये कृषि संकट को तीखा बनाने में योगदान देते हैं। कृषि के पूंजीवादीकरण के फलस्वरूप किसान आबादी में तेजी से विभेदीकरण हुआ है। पूंजीवादी भूस्वामी, पूंजीवादी फार्मर, धनी किसान, मझोले किसान, छोटे किसान, अर्ध सर्वहारा, सर्वहारा के रूप में ही आज भारत के देहातों का वर्गीय स्वरूप है। इसके अलावा देहात में निम्न

पूंजीपति वर्ग के अन्य हिस्से मसलन अध्यापक, छोटे दुकानदार आदि हैं। खेतीहर सर्वहारा व गैर कृषि कार्यों में लगे सर्वहारा को मिलाकर बनने वाली सर्वहारा आबादी देहातों की सबसे बड़ी आबादी है।

2.11 भारत में शहर और देहात में मिलाकर निम्न पूंजीपति वर्ग की एक बड़ी आबादी है। इस वर्ग की त्रासदी यह है कि यह रात-दिन पूंजीपति वर्ग में शामिल होने की आकांक्षाएं पालता है और पूंजीवाद इसे निरंतर सर्वहारा की पांतों की ओर धकेलता है। भारतीय राजसत्ता इस वर्ग के बुद्धिजीवी सदस्यों के एक अच्छे खासे हिस्से को अपने दायरे में समेटने में सफल है।

2.12 आजादी के बाद से भारत की मेहनतकश जनता के विभिन्न हिस्से शासक वर्ग के खिलाफ उसके जन-विरोधी प्रतिक्रियावादी चरित्र के खिलाफ निरंतर संघर्षरत रहे हैं। इन संघर्षों के फलस्वरूप जनता ने कई जनवादी अधिकार हासिल किये। देश में जनवाद का विस्तार हुआ। तेलंगाना-नक्सलबाड़ी में कम्युनिस्टों के नेतृत्व में चले सामन्तवाद विरोधी किसान आंदोलन, '73-'74 के दौरान के मजदूर संघर्ष, आपातकाल का व्यापक विरोध, अलग राज्यों की मांग को लेकर चले आंदोलन, मातृ भाषाओं को मान्यता दिलाने तथा इसमें शिक्षा प्रारम्भ करने को लेकर चले आंदोलन, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के संघर्ष, जात-पात विरोधी आंदोलन, आदिवासियों के संघर्ष, छात्रों युवाओं के कई संघर्षों के साथ-साथ समय-समय पर होने वाले मजदूरों-किसानों के संघर्ष इसमें प्रमुख हैं। कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों ने सामंतवाद विरोधी तथा जनवादी मांगों को लेकर कई सफल-असफल संघर्ष किये। भारतीय समाज में जनवाद के विस्तार में संसदीय पार्टियों की अपने आधार को बनाये रखने की कवायद की भी भूमिका है।

2.13 भारतीय समाज में जाति व्यवस्था की नींव खोदने में पूंजीवाद ने निर्णायक भूमिका निभायी है। नयी पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली ने क्रमशः निश्चित पेशा आधारित जाति व्यवस्था को तोड़कर उसके सदियों से चले आ रहे आर्थिक आधार को ध्वस्त कर दिया है। बुर्जुआ राजसत्ता की नीतियों तथा पूंजी के व्यापक प्रभाव में दलितों व पिछड़ों के मध्य से निम्न पूंजीपति वर्ग के साथ-साथ पूंजीपति वर्ग भी पैदा हुआ है। इसके बावजूद जाति व्यवस्था नष्ट नहीं हुयी है। भारत में मूलाधार व अधिरचना के क्षेत्र में इसकी उपस्थिति बरकरार है। पूंजीवादी प्रक्रिया में यह गैर-आर्थिक दबाव का कार्य करती है। चुनावी राजनीति में शासक वर्गीय पार्टियां इसका कारगर तरीके से इस्तेमाल कर अपनी महत्वाकांक्षाओं को साधती हैं तथा सर्वहारा व उसके मित्र वर्गों के सदस्यों को पूंजीवादी दायरे में बांधे रखती हैं।

2.14 नारी समुदाय भारतीय समाज का उत्पीड़ित तबका है। पूंजीपति वर्ग एक समुदाय के रूप में नारियों का शोषण-उत्पीड़न करता है। पूंजीपति वर्ग की महिलायें नारी उत्पीड़न की आम तौर पर शिकार नहीं है वे स्वयं मेहनतकश वर्ग की महिलाओं व पुरूषों के शोषण-उत्पीड़न में भागीदारी करती हैं। मेहनतकश वर्ग की महिलाओं के कन्धों पर पूंजीवादी शोषण व नारी उत्पीड़न का दोहरा जुआ रखा हुआ है। पितृसत्तात्मक, सामंती व धार्मिक मूल्यों के कारण महिलाओं की गुलामी का रूप व्यापक, संगठित, संस्थागत व निरंकुश हो जाता है। परिवारों के भीतर होने वाली हिंसा व अत्याचार पूंजीवादी समाज में हो रही वर्गीय व लैंगिक हिंसा का ही जारी रूप है। अशिक्षा, कुपोषण, सामाजिक असुरक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, दहेज हत्या, भ्रूण हत्या, वैश्यावृति, दिमागी गुलामी, यौन शोषण-उत्पीड़न आदि नारी समुदाय की भारतीय समाज में भयावह स्थिति का चित्र उजागर करते हैं।

2.15 साम्प्रदायिकता की समस्या ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में उपनिवेशवादियों के घृणित हथकंडों के कारण उपजी और वर्तमान पूंजीवादी समाज में विकरालता के साथ मौजूद है। भारत के पूंजीपति वर्ग ने साम्प्रदायिकता के कारगर हथियार का प्रयोग अपने शासन व शोषण को बनाये रखने के लिए किया है। धर्म के आधार पर भारत-पाकिस्तान के गलत बंटवारे ने इस समस्या को बढ़ाने में महती भूमिका निभाई। आजादी के बाद से भारत में साम्प्रदायिक दंगों में लाखों लोग मारे जा चुके हैं। पिछले कुछ समय से एक नई प्रवृत्ति यह बढ़ी है कि दंगे सुनियोजित व प्रायोजित हो रहे हैं। परम्परागत धार्मिक विवादों के कारण दंगे की प्रवृत्ति घटी है, जबकि हिंदू फासीवादी संगठनों द्वारा चुनावी राजनीति में लाभ हासिल करने (व अपने दीर्घकालिक फासीवादी एजेण्डे को लागू कराने) और इसी तरह इसके प्रति-उत्तर में होने वाली मुस्लिम कट्टरपंथी तथा अन्य साम्प्रदायिक प्रवृत्तियां बढ़ी हैं।

2.16 भारत एक बहुराष्ट्रीय देश है। पूंजीवाद के असमान व असंतुलित विकास की प्रकृति ने राष्ट्रीयता की समस्या को विविध रूप में प्रस्तुत किया है। राष्ट्रीयताओं की जनवादी आंकाक्षाएं और भारतीय राजसत्ता का केन्द्रीकृत चरित्र एक ऐसे अंतर्विरोध को जन्म देते हैं जिसका समाधान पूंजीवादी व्यवस्था के दायरे में पूर्ण रूपेण सम्भव नहीं है। भारत में राष्ट्रीयतायें विकास की विभिन्न अवस्थाओं में खड़ी हैं। कुछ भारतीय राजसत्ता के साथ नाभिनालबद्ध हैं, कुछ मुखर उत्पीड़ित राष्ट्रीयताएं भारतीय राजसत्ता के साथ संघर्षरत हैं, कुछ राष्ट्रीयताएं विकसित हैं तो कुछ महज भाषाई, सांस्कृतिक समूह के स्तर पर खड़ी हैं। भारत की उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं का उत्पीड़न कोई विशिष्ट राष्ट्रीयता नहीं करती। भारतीय राज्य व शासक वर्ग इनके उत्पीड़न के लिए जिम्मेदार हैं।

2.17 भारत में जनजातियों व आदिवासियों का पार्थक्य देश के पूंजीवादी विकास के फलस्वरूप मुख्यतः टूट चुका है। ये भारतीय समाज की वर्गीय संरचना के हिस्से बनते चले गये हैं। भारतीय पूंजीवादी व्यवस्था इनमें से अधिकांश को उजरती गुलाम में तब्दील कर रही है। परम्परागत जीवन शैली व परिवेश से उजाड़ने की इनकी व्यथा व दुर्गति भयानक गरीबी, कुपोषण, बेरोजगारी, अशिक्षा के कारण कई गुना बढ़ जाती है।

2.18 राष्ट्रीयता एवं जनजातीय उत्पीड़न के रूप में ही भाषायी समस्या भारत में मौजूद है। भारतीय शासक वर्ग ने कई भाषा और बोलियों के विकास को बाधित किया तथा अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व को बनाये रखा है। भारत में बढ़ती साम्राज्यवादी संस्कृति के प्रभाव के कारण आम लोगों का भाषायी उत्पीड़न बढ़ा है।

2.19 भारतीय शिक्षा व संस्कृति अपने चरित्र में सारतः पूंजीवादी है परंतु अपने भीतर ये सामंती पितृसत्तात्मक मध्ययुगीन धार्मिक मूल्यों व मान्यताओं उसमें भी विशेषकर हिन्दू-ब्राह्मणवादी मूल्यों को समेटे हुए हैं। औपनिवेशिक अतीत की छाया से भी भारतीय शिक्षा व संस्कृति कभी मुक्त नहीं हुई। अब साम्राज्यवाद के नये हमलों ने इसके उत्पीड़क और शोषणकारी चरित्र में और इजाफा किया है। परोपजीवी वर्ग की यह संस्कृति समाज में अलगाव, कई किस्म की मानसिक बीमारियों व तनाव के साथ गहरे आत्मिक संकट को जन्म देती है।

2.20 आम मेहनतकश परिवारों के छात्रों-युवाओं को वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था के कारण एक के बाद एक कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। श्रम के प्रति हेय दृष्टि पैदा करने वाली पूंजीवादी शिक्षा, बेराजगारी, असुरक्षा की भावना, असुरक्षित भविष्य, गरीबी और अभाव से युक्त जीवन, बुरा स्वास्थ्य, गहरा आत्मिक संकट, भारतीय समाज में मौजूद जात-पांत अंधविश्वास के साथ सामंती मूल्य और साम्राज्यवाद के बढ़ते प्रभाव ने छात्रों-युवाओं की समस्याओं को विकराल बनाया हुआ है।

2.21 नये सामाजिक आंदोलन और गैर सरकारी संगठनों के रूप में एक अति आधुनिक पूंजीवादी प्रवृत्ति मौजूद है। निम्न पूंजीपति और पूंजीपति वर्ग के वर्गीय आधार से उपजने वाली यह प्रवृत्ति पूंजीवाद और साम्राज्यवाद की सेवा करती है और समाज में सर्वहारा क्रांति के विकास में बाधाएं खड़ी करने की कोशिश करती है।

3. भारतीय समाज के प्रमुख अंतर्विरोध व रणनीतिक लाइन

3.1 बुनियादी अंतर्विरोध : पूंजी और श्रम के बीच का अंतर्विरोध भारतीय समाज को कई दशकों से निर्णायक तौर पर प्रभावित करने वाला बुनियादी और प्रधान अंतर्विरोध है। इस अंतर्विरोध ने भारतीय समाज के सभी बुनियादी और प्रमुख अंतर्विरोधों को प्रभावित किया है। इस अंतर्विरोध में फिलहाल पूंजी प्रधान व श्रम गौण पहलू है। पूंजी और श्रम के इस बुनियादी और प्रधान अंतर्विरोध के श्रम के पक्ष में हल होने से ही समाज के अन्य बुनियादी व प्रमुख अंतर्विरोधों के हल होने का मार्ग खुलेगा। समाजवादी क्रांति के जरिये ही यह अंतर्विरोध श्रम के पक्ष में हल हो सकता है।

भारतीय समाज का दूसरा बुनियादी अंतर्विरोध साम्राज्यवाद और भारतीय जनता के मध्य है। साम्राज्यवाद इस अंतर्विरोध का प्रधान पहलू है। साम्राज्यवाद के बढ़ते प्रभाव ने पूंजी और श्रम के प्रधान अंतर्विरोध के प्रधान पहलू पूंजी को मजबूत किया है।

3.2 प्रमुख अंतर्विरोध : भारतीय समाज के उपरोक्त बुनियादी अंतर्विरोधों के अतिरिक्त प्रमुख अंतर्विरोध निम्न हैं-

- भारतीय पूंजीपति वर्ग के विभिन्न धड़ों के बीच अंतर्विरोध :- इजारेदार व गैर इजारेदार; निजी व सार्वजनिक क्षेत्र के नौकरशाह पूंजीपति; शहरी व ग्रामीण; औद्योगिक, वाणिज्यिक व कृषि पूंजीपति; केन्द्रीय व क्षेत्रीय पूंजीपति आदि के रूप में मौजूद बंटवारे व धड़ेबंदी में अंतर्विरोध फिलहाल निजी क्षेत्र के इजारेदार पूंजीपतियों के पक्ष में है।
- भारतीय पूंजी (इजारेदार व गैर इजारेदार) तथा साम्राज्यवाद के बीच अंतर्विरोध :- यह अंतर्विरोध फिलहाल सांठ-गांठ की अवस्था में है। अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय परिस्थितियों में परिवर्तन होने की अवस्था में यह अंतर्विरोध सांठगांठ की अवस्था से कलह की अवस्था में आ सकता है।
- सामन्तवाद के अवशेष तथा भारतीय जनता के बीच अंतर्विरोध :- यह एक प्रमुख अंतर्विरोध है। यह अंतर्विरोध मूलाधार तथा अधिरचना में मौजूद है तथा कृषि के पूंजीवादी संकट को तीखा करने में योगदान करता है।

♦ भारतीय राजसत्ता व उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के बीच अंतर्विरोध :- भारत में पूंजीवादी विकास के साथ यह अंतर्विरोध अस्तित्व में आया। पूंजी बनाम श्रम के अंतर्विरोध में पूंजी के प्रधान पहलू होने के कारण यह अंतर्विरोध असमाधेय है।

♦ भारतीय जनता के बीच दोस्ताना अंतर्विरोध :- विभिन्न जातियों, सम्प्रदायों, जनजातियों, जनजातीय व गैर जनजातियों, स्त्री-पुरुषों, विभिन्न भाषायी व कौमी समूहों, मेहनतकशों के बीच के अंतर्विरोध भारतीय समाज में मौजूद हैं। इनकी प्रकृति दोस्ताना है। भारतीय शासक वर्ग इन अंतर्विरोधों का इस्तेमाल अपने वर्ग-स्वार्थों को साधने के लिए करता है।

3.3 क्रान्ति का उद्देश्य : पूंजीवादी उत्पादन सम्बन्धों का खात्मा तथा समाजवादी उत्पादन सम्बन्धों की स्थापना। साम्राज्यवाद द्वारा शोषण व उत्पीड़न के सभी रूपों का खात्मा।

♦ क्रान्ति के मुख्य शत्रु : भारतीय इजारेदार पूंजीपति वर्ग के नेतृत्व में समस्त शहरी व ग्रामीण पूंजीपति वर्ग तथा साम्राज्यवादी पूंजीपति वर्ग।

♦ क्रान्ति की मुख्य लड़ाकू शक्ति : औद्योगिक सर्वहारा के नेतृत्व में शहरी व ग्रामीण सर्वहारा तथा अर्ध सर्वहारा (खेतीहर व गैर-खेतीहर)।

♦ क्रान्ति के फौरी रिजर्व : छोटे किसान।

♦ क्रान्ति के ढुल-मुल मित्र : मझोले किसान व शहरी-ग्रामीण अन्य निम्न पूंजीपति वर्ग।

♦ मुख्य हमले की दिशा : पूंजीवादी तानाशाही को खत्म करके सर्वहारा तानाशाही कायम करना। समाजवादी राज्य को मजदूरों-किसानों के संश्रय पर आधारित करना।

♦ क्रान्ति के उप-उत्पाद : जनवादी क्रांति के बचे-खुचे कार्यभारों को पूरा करना। शोषण-उत्पीड़न के सभी प्राक् पूंजीवादी रूपों का खात्मा।

4. भारतीय क्रान्ति के लक्ष्य तथा कार्यभार

4.1 भारत की समाजवादी क्रांति सर्वहारा के नेतृत्व में होगी। सर्वहारा वर्ग को नेतृत्व उसके वर्ग की पार्टी कम्युनिस्ट पार्टी देगी। इस पार्टी की विचारधारा मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा होगी।

4.2 यह पार्टी सर्वहारा वर्ग को संगठित करेगी। यह पार्टी अन्य मेहनतकश वर्गों व तबकों को भी संगठित करेगी तथा क्रांतिकारी वर्गों का संयुक्त मोर्चा कायम करेगी। यह पार्टी इस मोर्चे को नेतृत्व प्रदान करेगी।

4.3 भारतीय क्राति सर्वहारा चरित्र की होगी। औद्योगिक सर्वहारा के नेतृत्व में समस्त सर्वहारा, अर्ध-सर्वहारा, क्रांति की मुख्य लड़ाकू शक्ति होंगे। छोटे किसान इस क्रांति के मुख्य रिजर्व तथा सबसे भरोसमंद मित्र होंगे। मझोले किसान तथा शहरी-ग्रामीण निम्न पूंजीपति वर्ग इस क्रांति के ढुल-मुल सहयोगी होंगे। सर्वहारा, छोटे किसान तथा शहरी-ग्रामीण निम्न पूंजीपति वर्ग के रणनीतिक संश्रय पर आधारित यह क्रांति पूंजीवादी तानाशाही और उसकी उत्पादन प्रणाली को निशाना बनायेगी। समाजवादी क्रांति अपने उप-उत्पाद के रूप में मूलाधार व अधिरचना में सामंती व प्राक्-पूंजीवादी अवशेषों का खात्मा करेगी तथा जनवादी क्रांति एवम् राष्ट्रीय मुक्ति के अधूरे कार्यभारों को सम्पन्न कर देगी। भारत की क्रांति साम्राज्यवाद व सर्वहारा क्रांतियों के युग की क्रांति है।

4.4 भारतीय पूंजीवादी व्यवस्था के चरित्र को देखते हुए भारतीय क्रांति आम विद्रोह के जरिये सम्पन्न होगी। वर्ग संघर्ष की उच्चतर मंजिलों में सर्वहारा को सशस्त्र करके लाल सेना का निर्माण करना होगा। क्रांति के आसन्न होने पर भारत के शासक वर्ग की सेना, अर्ध सैनिक बलों में विघटन होकर उसका एक हिस्सा सर्वहारा के पक्ष में आ खड़ा होगा।

4.5 भारत की सर्वहारा क्रांति वर्तमान पूंजीवादी राज्य की सम्पूर्ण राज्य मशीनरी को ध्वस्त करके सर्वहारा तानाशाही को लागू करने वाले समाजवादी राज्य का निर्माण करेगी। समाजवादी राज्य कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में मजदूरों-किसानों के संश्रय पर आधारित होगा।

4.6 भारतीय सर्वहारा क्रांति विश्व सर्वहारा क्रांति का अभिन्न हिस्सा है। भारत की सर्वहारा क्रांति विश्व सर्वहारा क्रांति की विजय में अपना योगदान करेगी तथा विश्वभर के सर्वहारा वर्ग के सहयोग व समर्थन से यह मजबूती ग्रहण करेगी। भारत का समाजवादी राज्य सर्वहारा वर्ग के अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की नीति का पालन करेगा।

4.7 भारत का समाजवादी राज्य संघात्मक स्वरूप का होगा। इसमें सभी राष्ट्रीयताओं को अलग हो जाने के अधिकार के साथ आत्मनिर्णय का अधिकार होगा।

4.8 भारत का समाजवादी राज्य सभी इजारेदार गैर इजारेदार पूंजीपतियों की समस्त पूंजी, वर्तमान पूंजीवादी राज्य की समस्त सम्पत्ति व पूंजी, सारी साम्राज्यवादी व विदेशी पूंजी व सम्पत्ति को जब्त करके समाजवादी राज्य की सम्पत्ति घोषित कर देगा। सारे परजीवी प्रतिक्रियावादी वर्गों की सम्पूर्ण सम्पत्ति को अपने कब्जे में ले लेगा।

4.9 सभी साम्राज्यवादी देशों व संस्थाओं के कर्जो को रद्द कर देगा। यह सभी भेदभाव वाली संधियों को रद्द कर देगा। इसके साथ ही यह भारतीय विस्तारवादी शासकों द्वारा कमजोर देशों पर थोपी गयी भेदभाव पूर्ण संधियों को रद्द कर देगा तथा उन्हें अपने कर्जो से मुक्त कर देगा।

4.10 समाजवादी राज्य छोटे स्तर के पूंजीपतियों की सम्पत्ति की जब्ती के स्थान पर खरीद की नीति का पालन करते हुए उसे जनता की सम्पत्ति में क्रमशः तब्दील कर देने की नीति का भी अनुसरण कर सकता है।

4.11 समाजवादी राज्य उजरती गुलामी के सभी रूपों का खात्मा करेगा। और शोषण करने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा देगा।

4.12 समाजवादी राज्य ग्रामीण पूंजीपतियों की सारी भूमि व पूंजी का अधिग्रहण कर लेगा। मठों व अन्य धार्मिक प्रतिष्ठानों की भूमि और सम्पत्ति जब्त कर ली जायेगी। और सम्पूर्ण भूमि का राष्ट्रीयकरण कर भूमि की बिक्री, हस्तान्तरण, उत्तराधिकार, किराये पर देने जैसी गतिविधियां अवैध घोषित कर दी जायेंगी।

4.13 भारत में जनवादी क्रांति के भूमि सम्बंधी अधूरे कार्यों के मद्देनजर समाजवादी राज्य देश के कुछ स्थानों में भूमि वितरण की नीति अपना सकता है परन्तु इस कार्यवाही की दिशा किसानों को सामूहिक खेती की ओर प्रेरित करनी की होगी। ऐसे ही कुछ स्थानों पर समाजवादी राज्य सरकारी वन भूमि का वितरण आदिवासियों या ऐसे ही अन्य उत्पीड़ित तबकों के बीच कर सकता है।

4.14 इसी तरह समाजवादी राज्य छोटे उत्पादकों, दस्तकारों, स्वरोजगारशुदा जैसों के साथ उनके उत्पाद की खरीद, प्रोत्साहन, इनके उत्पादन साधनों की मुआवजा सहित खरीद सहकारीकरण के लिए प्रोत्साहन राज्य के द्वारा उनके रोजगार का उचित बंदोबस्त जैसे कार्यों-नीतियों के द्वारा छोटे पैमाने के उत्पादन की व्यवस्था को क्रमशः खत्म करेगा।

4.15 छोटे किसानों के साथ-साथ मझोले किसानों को समाजवादी राज्य औद्योगिक व व्यापारिक पूंजीपतियों द्वारा नियंत्रित बाजार के शोषण- इजारेदाराना स्थितियों में गैर-बराबरी पर विनिमय- से मुक्ति दिलायेगा; कर्ज जाल से मुक्त करेगा; बिना ब्याज के ऋण सुविधायें उपलब्ध करायेगा। इस तरह के सारे कदम समाजवादी राज्य क्रांति के शुरूआती कदम के बतौर उठायेगा। समाजवादी समाज एक सुदीर्घ अवस्था है। इसमें सर्वहारा राज्य समाजवादी समाज को सुदृढ़ करने के लिए छोटे पैमाने के उत्पादन की स्थिति को शीघ्र से शीघ्र समाप्त करेगा। धनी किसानों की मझोले किसानों के स्तर से ऊपर की भूमि का अधिग्रहण करेगा। समाजवादी राज्य सामूहिक स्वामित्व प्रणाली के विकास के लिए सहकारीकरण- सामूहिकीकरण-राजकीयकरण की नीति अपनायेगा।

4.16 भारत का समाजवादी राज्य वर्तमान पूंजीवादी संविधान और उसकी व्यवस्था, सम्पत्तिशाली वर्गों के सभी विशेषाधिकार रद्द करके सर्वहारा तानाशाही कायम करने वाले समाजवादी संविधान के आधार पर गठित होगा यह, तद्नुरूप शासन व्यवस्था का निर्माण करेगा।

4.17 समाजवादी राज्य स्थानीय स्तर से लेकर अखिल भारतीय स्तर तक निर्वाचित इकाइयों के माध्यम से सर्वहारा के नेतृत्व में जनता की राजनीतिक सत्ता कायम करेगा। मतदान सार्विक गुप्त व समान होगा तथा जनता को अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का अधिकार होगा। मतदाता न्यायिक व प्रशासनिक अधिकारियों का भी चुनाव करेंगे। इन चुने हुए अधिकारियों को वापस बुलाने का अधिकार होगा। समाजवादी राज्य जन भागीदारी को हर स्तर पर बढ़ायेगा।

4.18 समाजवादी राज्य पूंजीपति वर्ग की वर्तमान भाड़े की सेना, अर्ध सैनिक बलों और पुलिस को भंग करके सर्वहारा वर्ग और अन्य मेहनतकशों को हथियार बंद करके जन-सेना और जन-मिलिशिया गठित करेगा जो कि देश के भीतर-बाहर के दुश्मनों, गद्दारों और प्रतिक्रियावादी शक्तियों का मुकाबला करेगी। जन-सेना और जन-मिलिशिया जनवादी केन्द्रीयता के सिद्धान्तों के अनुरूप गठित होंगे और व्यवहार करेंगे।

4.19 समाजवादी राज्य समाज में समाजवादी मूल्यों और संस्कृति की स्थापना करेगा। पूंजीवादी सांस्कृतिक-मूल्यों सहित सभी प्रतिगामी, प्रतिक्रियावादी, गैर जनवादी, अवैज्ञानिक मूल्यों व संस्कृति के खिलाफ सतत् संघर्ष छेड़ेगा और समाज में जाति-भेद, यौन-भेद, भाषायी-भेद, सम्प्रदायभेद, इलाकावाद, अंधराष्ट्रवाद आदि के आधार पर होने वाले शोषण-उत्पीड़न को पूर्णतः समाप्त करेगा। सर्वहारा राज्य समाजवादी सांस्कृतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करेगा। राज्य समाज

के सभी उत्पीड़ित-शोषित तबकों, महिलाओं, आदिवासियों अल्पसंख्यकों दलितों को पूंजीवादी समाज में होने वाले शोषण-उत्पीड़न, अपमान, गैर बराबरी के दलदल से बाहर निकालने के लिए विशेष उपाय करेगा तथा उनकी पहलकदमी खोलकर समाज में यथोचित स्थान दिलायेगा। राज्य महिलाओं को गृह-दासता से मुक्त करके सामाजिक उत्पादन प्रणाली तथा सामाजिक-राजनीतिक जीवन में उनकी भूमिका को सुनिश्चित करेगा तथा इसके लिए आवश्यक उपाय यथा-शिशुगृहों, दिवसगृहों, सामूहिक रसोई इत्यादि का प्रबंध करेगा।

4.20 समाजवादी राज्य में सभी नागरिकों को रोजगार का अधिकार होगा तथा इसे उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी राज्य की होगी। बेरोजगारी का पूर्ण रूप से उन्मूलन किया जायेगा। रोजगार उपलब्ध कराने में राज्य 'प्रत्येक को योग्यातानुसार काम तथा काम के अनुसार वेतन' के समाजवादी नियम का पालन करेगा। इसी तरह 'समान काम के लिए समान वेतन' के आधार पर सभी भेदभाव समाप्त किये जायेंगे। मानसिक श्रम व शारीरिक श्रम के भेद को खत्म करने के उपाय करते हुए समाजवादी राज्य इसमें छुपे बुर्जुआ अधिकार को अंततः समाप्त कर देगा।

4.21 समाजवादी राज्य सभी राष्ट्रीयताओं के अलग होने के अधिकार सहित आत्मनिर्णय के अधिकार को सर्वहारा वर्ग के हितों के मद्देनजर मान्यता प्रदान करेगा। भारत एक समाजवादी संघ होगा जिसमें सभी राष्ट्रीयताओं और भाषाओं का दर्जा समान होगा तथा राज्य उनके विकास के लिए समान अवसर व अनुकूल स्थितियां उपलब्ध करायेगा।

4.22 समाजवादी राज्य 'सभी को शिक्षा का अधिकार' की नीति अपनायेगा तथा निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराना राज्य की जिम्मेदारी होगी। राज्य नागरिकों की शिक्षा उनकी मातृभाषा में उपलब्ध करायेगा। धार्मिक व पूंजीवादी शिक्षा का खात्मा करते हुए राज्य श्रम केन्द्रित, वैज्ञानिक समाजवादी शिक्षा उपलब्ध करायेगा।

4.23 समाजवादी राज्य सभी नागरिकों के लिए निःशुल्क तथा समान स्वास्थ्य व्यवस्था की नीति को लागू करेगा।

4.24 समाजवादी राज्य धर्म की राज्य, शिक्षा, राजनीति तथा सामाजिक जीवन के अन्य पहलुओं में हस्तक्षेप की भूमिका को समाप्त करेगा। समाजवादी राज्य नागरिकों को धर्म एवम् अपने विश्वासों के पालन की स्वतंत्रता देगा। समाजवादी राज्य वैज्ञानिक व ऐतिहासिक भौतिकवाद के दृष्टिकोण को आधार बनाकर अनीश्वरवाद का प्रचार करेगा।

4.25 समाजवादी राज्य व्यक्ति तथा उसके आवास की अनुलंघनीयता को मान्यता देगा। मेहनतकश जनता के सदस्यों को भाषण देने, प्रेस में विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता, इकट्ठा होने, हड़ताल करने, राज्य व पार्टी की नीतियों की आलोचना करने जैसे अधिकार प्रदान करेगा।

4.26 समाजवादी राज्य विदेश सम्बंधों के मामले में सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद के बुनियादी सिद्धान्त का पालन करेगा। सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धान्त के तहत समाजवादी देशों के साथ पारस्परिक सहयोग का सम्बंध विकसित करना; सभी उत्पीड़ित जनता और राष्ट्रों के क्रांतिकारी संघर्षों की मदद करना; क्षेत्रीय अखण्डता एवं सम्प्रभुता के परस्पर सम्मान, अनाक्रमण, एक दूसरे के आंतरिक मामलों में अहस्तक्षेप; समानता एवं परस्पर लाभ और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के आधार पर अन्य सामाजिक व्यवस्थाओं के अधीन देशों के साथ शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व के लिए प्रयास करना, आक्रमण और युद्धों की साम्राज्यवादी नीति का विरोध करना और साम्राज्यवादी शक्तियों के प्रभुत्ववाद का विरोध करना आता है। समाजवादी राज्य का यह सिद्धान्त दुनिया की सारी जनता के हितों को साधता है।

4.27 समाजवादी राज्य के सर्वहारा चरित्र को बनाये रखने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी समाज में निरन्तर सक्रिय, सजग रहते हुए सर्वहारा वर्ग को नेतृत्व प्रदान करते हुए महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के सिद्धान्तों का अनुसरण करेगी। सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांतियां इसलिए आवश्यक होंगी ताकि सर्वहारा वर्ग की तानाशाही कायम व सुदृढ़ रह सके, समाजवादी राज्य पूंजीवादी राज्य में तब्दील न हो सके, समाजवादी निर्माण को जारी रख कर साम्यवादी समाज की ओर निरन्तर बढ़ा जा सके।

4.28 समाजवादी राज्य सभी वर्गों और अन्य विभेदों जिसमें मजदूर और किसान के बीच का अंतर, शहर और गांव का अंतर, शारीरिक श्रम व मानसिक श्रम का अंतर शामिल हैं के पूर्ण उन्मूलन; बुर्जुआ अधिकार का सम्पूर्ण नाश करने; उत्पादन के साधनों पर समूची जनता के स्वामित्व की एकल व्यवस्था कायम करने; अत्यधिक प्रचुर मात्रा में सामाजिक उत्पादों का सृजन करने; समूची जनता के बीच ऊंचे दर्जे की कम्युनिस्ट विचारधारात्मक चेतना विकसित व नैतिक मापदण्ड पैदा करने; 'प्रत्येक से उसकी क्षमतानुसार, प्रत्येक को आवश्यकतानुसार' के सिद्धान्त को अपनाने और अंततः राज्य के विलोपीकरण की दिशा की ओर काम करेगा।

4.29 कम्युनिस्ट समाज समग्र रूप से साम्राज्यवाद, पूंजीवाद और उन तमाम व्यवस्थाओं, जिसमें मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण होता है, के अन्त से कायम होगा। यह वर्ग विहीन, राज्यविहीन समाज होगा। जब ऐसा होगा तभी सम्पूर्ण मानवता की पूरी तरह से मुक्ति होगी। कम्युनिस्ट पार्टी का यही अंतिम उद्देश्य है। इसके पूरा होने के साथ ही कम्युनिस्ट पार्टी भी तिरोहित हो जोयेगा। ■■■